नंदीषेण

मगध-नरेश श्रेणिक के अनेक पुत्र थे—कोणिक, हल्ल, विहल्ल, मेघकुमार, नंदीषेण आदि। नंदीषेण शस्त्र-विद्या के साथ हस्तिदमनी-विद्या में भी कुशल था। हाथियों से खेलने का उसे शौक था।

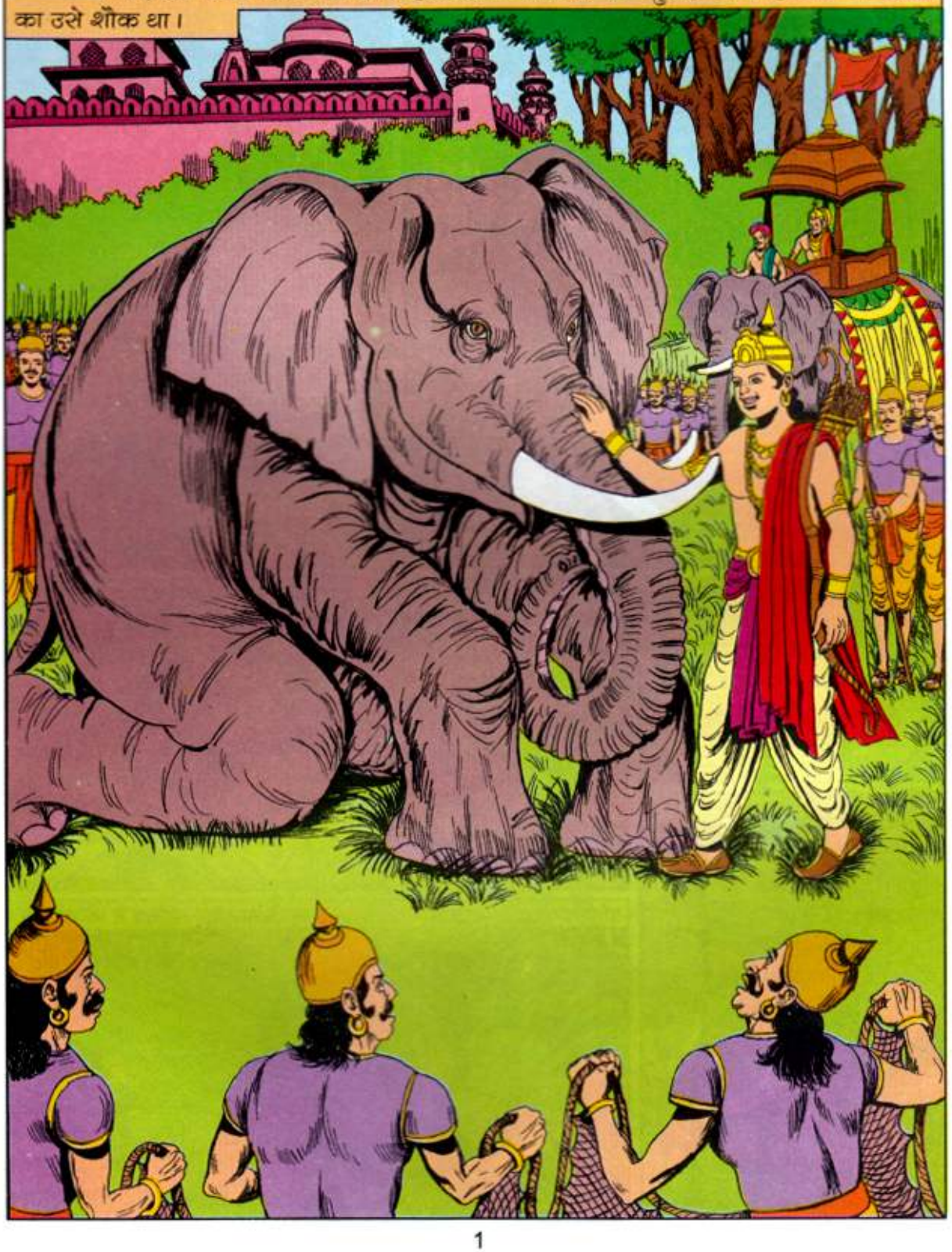

राजगृह के पास के जंगलों में हाथियों के झुंड रहते थे। एक झुंड का राजा हाथी-हथिनियों के साथ केले के वनों में जा रहा था। एक जगह उसे एक किशोर नर हाथी हथिनियों के साथ क्रीड़ा करता दिखाई दिया।

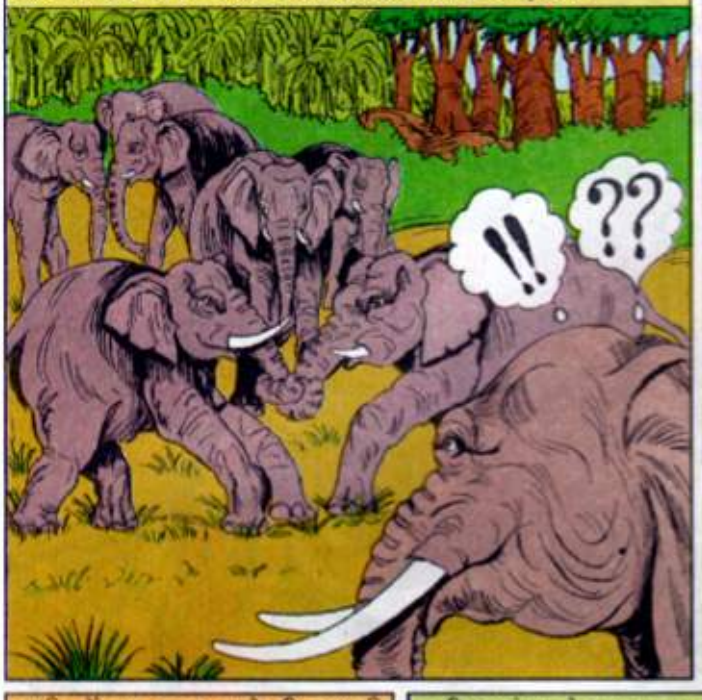

अचानक उसे पूर्व-जन्म की स्मृति हुई-किसी दूसरे जंगल से आये हाथी ने उस पर आक्रमण कर दाँतों और पाँवों से रौंद डाला। वह मरणासन्न पड़ा सिसक रहा था।

स्मृति में यह दृश्य आते ही यूथपति सोचने लगा।

इसी आशंका के कारण वह क्रोध में बिफर उठा और किशोर हाथी पर टूट पड़ा।

दाँतों व पाँवों से आक्रमण कर उसे जान से मारकर तालाब में फेंक दिया।

फिर वह क्रोध में उन्मत्त होकर एक-एक हाथी को ढूँढ-ढूँढकर मारने लगा।

थोड़े दिनों में ही जंगल पर उसका एकछत्र राज्य हो गया।

एक बार एक हथिनी गर्भवती हुई। उसने सोचा—

यह दुष्ट यूथपति शिशु का जन्म होते ही उसे मार डालेगा, कैसे भी हो मैं अपने पुत्र की रक्षा करूँगी।

वह यूथ के साथ लँगड़ाती धीरे-धीरे चलती और सबसे पीछे रह जाती। कभी-कभी दो-चार दिन तक गायब रहकर फिर आकर यूथ में मिल जाती। यूथपति ने दो-चार बार उस पर ध्यान दिया। फिर सोचा—

लँगड़ी हो गई है, धीरे-धीरे चलकर आ जायेगी।

यूथपति निश्चिंत हो गया।

हथिनी का प्रसवकाल नजदीक आया तो वह सुरक्षित स्थान खोजती हुई दूर नदी तट पर बसे एक आश्रम पर पहुँच गई। ऋषियों ने हथिनी को देखा—

ओह! बिचारी लँगड़ी हथिनी सिर पर तिनकों का पूला रखकर शरण माँगने आई है। लगता है, शीघ्र ही बच्चे को जन्म देने वाली है।

आश्रम में हथिनी को शरण मिल गई।